संगीत व साहित्य की मूल पवित्रता व शुद्धता को बनाए रखना आवश्यक है - सोनी

माउंट आबू, 6 मई। राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त सितारवादक प्रो. रूपकुमार सोनी ने कहा है कि वर्तमान परिवेश में संगीत व साहित्य की मूल पवित्रता व शुद्धता को बनाए रखने के लिए कलाकारों व साहित्यकारों का नैतिक दायित्व है। वे ब्रह्माकुमारी संस्थान के ज्ञान सरोवर परिसर में कला एवं साहित्य प्रभाग की ओर से आधुनिक साहित्य व सांस्कृतिक मूल्य विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि संत्रस्त व तनावग्रस्त मनुष्यों के लिए संगीत सुकून व सहारा देने का कार्य करता है। संगीत आत्मा की तरह अविनाशी है जिसकी न कभी मृत्यु होती, न ही कभी जन्म। एक अच्छा कलाकार किसी भी विधा को आत्मसात कर जीवनभर साधनारत रहता है। कलाकार किसी साधक से कमी नहीं है जो संगीत के माध्यम से निराशमय जीवन को आशावादी बनाते हुए सही दिशा देने में सक्षम है।

संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि आध्यात्मिकता हमें आंतरिक बोध कराती है जिससे मानव सहज ही सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर नैनिक मूल्यों की धारणा करता है। सच्ची कला वह है जो मनुष्य को महानता की ओर ले जाए। कलाकारों को अपनी कला द्वारा समाज में श्रेष्ठता लाने का लक्ष्य रखना चाहिए। सत्य को आत्मसात करने से जीवन सरल व श्रेष्ठ बन जाता है जिससे व्यक्ति का चरित्र भी सम्मान योग्य होता है। कलाकारों को अपने जीवन में मूल्यों का रंग भरकर स्वयं को दर्शनीयमूर्त बनाने की कला सर्वोच्च कलाकार परमपिता परमात्मा सीखनी चाहिए।

ओस्मानिया युनिवर्सिटी के भक्ति साहित्य शोध संस्थान के निदेशक, 105 नाटकों के लेखक प्रो. प्रदीप ने कहा कि श्रेष्ठ साहित्य व मूर्धन्य साहित्यकारों के होते भी सांस्कृतिक मूल्यों का संकट पैदा होना बड़ी बिडम्बना है। इस संस्था में मैने यह अनुभव किया कि मौन सर्वश्रेष्ठ वक्तव्य है। विश्व में आपसी भेदभाव को मिटाते हुए सद्भावना का संचार करने के लिए कलाकार अपनी श्रेष्ठ कला के माध्यम से पुनीत कार्य कर सकते हैं।

एफआरएनएस लन्दन शशिकांत भट्ट ने कहा कि मौन की शक्ति से आत्मिक शक्तियां जागृत होती हैं। जहां पवित्रता, सादगी व सेवा भावना होती है वहां का वातावरण आने वाले व्यक्ति को आकर्षित करते हुए गहन शांति का अहसास कराता है। उत्साह व श्रद्वा के साथ कलाकार नुक्कडनाटकों के माध्यम से हर किसी को निर्व्यसनी व मूल्यों से संपन्न बनने की भावनात्मक प्रेरणा प्रदान कर सकता है।

दर्जनों पुस्तकों की लेखिका माधुरी पटनायक ने कहा कि लेखक अपनी रचनाओं के जरिए अनेकों के हृदय को बदल कर जीने की कला सिखाता है। साहित्य सदैव आधुनिक होता है हमारे प्राचीन साहित्य आज भी सामयिक व उपयोगी हैं। साहित्यकार ही वे प्रेरक स्रोत थे जिन्होंने लाखों भारतीयों को आजाद कराने के लिए आंदोलित किया। लेखक कभी मरता नहीं है वह तो अपनी अमर रचनाओं के माध्यम से अनेकों के हृदय में सदा जीवित रहता है।

डॉ हरीश शुक्ला ने कहा कि भले गांधीजी ने देश को आजाद कराया लेकिन गांधीवादी विचारधारा से जन जन को उद्वेलित करने का कार्य तो साहित्यकारों ने किया। आज विश्व बापू परमपिता परमात्मा शिव संसार को विकारों की गुलामी से मुक्त करने का भगीरथ कार्य कर रहे हैं।

प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बीके सतीश ने कहा कि अच्छे साहित्य की कमी नहीं है, न ही अच्छे लोगों की कमी है कमी है तो सांस्कृतिक मूल्यों की, जिनके नकारात्मक प्रवाह में बह जाने से समाज का स्वरूप बिगड़ता जा रहा है। राष्ट्र नहीं बनता कोरे भाषणों से, वादों से, नारों से, राष्ट्र तो बनता है अपनी जनता के आचार विचारों से।

दिव्यजीवन छात्रावास निदेशिका बीके करूणा बहन ने कहा कि सत्यता ही मनुष्य को चरित्रवान बनाती है। सत्य का अनुगामी व्यक्ति जीवन में आने वाली परिस्थितियों को सहज भाव से पार करने में सक्षम होता है।